।। ओ३म्।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

नव-सम्वत्सर 2070 एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 36, अंक 21 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 08 अप्रैल, 2013 से 14 अप्रैल, 2013 तक
विक्रमी सम्वत् 2070 दयानन्दाब्द : 189
सृष्टि सम्वत् 1960853114 वार्षिक : 250 रुपये
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
Website:www.thearyasamaj.org पृष्ठ 1 से 4 तक

वैदिक नव वर्ष पर विशेष

चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा को नव-संवत्सर (नववर्ष) उत्साहपूर्वक मनाएं

- गंगा शरण आर्य

विश्व में मानव जीवन के इतिहास की कालगणना में प्राचीन परम्परा ही वैज्ञानिक नजर आती है। संवत् चाहे किसी नाम से तथा कहीं भी आरम्भ किए गए हों किन्तु इन सबका आरम्भ करने की परम्परा एक ही दिन चैत्र शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से की जाती रही है। नए कार्यों का आरम्भ भी नववर्ष की प्रतिपदा से ही करने की परम्परा आज भी बनी हुई है। नव संवत् के साथ ही भारत का प्रत्येक कार्यक्षेत्र चैत्र (अप्रैल) माह के प्रथम दिन से प्रारम्भ होता है। विद्यालयों में बच्चों की नई कक्षाओं का प्रारम्भ भी तो चैत्र माह से ही होता है इसे ही वित्तीय वर्ष भी कहते हैं लेकिन नववर्ष मनाया जाता है 1 जनवरी को। दरअसल हमारे देशवासियों की गुलामी की मानसिकता की जड़े इतनी गहरी हो गई हैं कि उनको उखाड़ फैंकना इतना आसान नहीं। बड़ी हैरानी की बात तो यह कि गुलामी के दौर में स्वराज्य की लड़ाई के दिनों में भी सब कुछ स्वदेशी था, लेकिन स्वतन्त्र भारत में अब सब कुछ विदेशी हो गया। आर्यावर्त्त भारत देश का कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि इस पवित्र दिन को हम अप्रैल फूल अर्थात् मूर्ख दिवस बनाने का दिन बताते हैं। भारतीय संवत्सर (नववर्ष) को जो कि दुनिया का सर्वप्रथम सर्वश्रेष्ठ एवं नैसर्गिक संवत्सर है, झुठलाकर 1 जनवरी (विदेशी नववर्ष) को हर्षोल्लास के साथ मनाने में हम ही अग्रणीय नहीं हैं बल्कि ये राजनेता भी जनता की इस बेवकूफी में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं व उन्हें मूर्ख बनाते हैं। राजनेताओं को स्पष्ट रूप से पता है कि देश की वित्तीय व्यवस्था को संचालित करने वाले वित्तीय वर्ष का प्रथम दिन 1 अप्रैल का दिन होता है फिर भी अंग्रेजियत का भूत इतना चढ़ा है कि 1 जनवरी पर ही नववर्ष की शुभकामनाएँ एवं बधाईयाँ बड़े–बड़े फ्लैक्स बोर्ड लगाकर देते हैं। एक माह पूर्व ही विदेशी नववर्ष की तैयारियाँ भारत में शुरू कर दी जाती हैं करोड़ों रुपये का खर्चा इस उत्सव के लिए व्यय किया जाता है। होटल रेस्तरां इत्यादि अपने–अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियाँ करने लगते हैं पोस्टर व कार्डों की भरमार के साथ शराब की दुकानों की भी चाँदी होती हैं। 31 दिसम्बर की आधी रात तक नववर्ष के स्वागत में बच्चे–बूढ़े और नौजवान पलके पिछाए 12 बजने का इंतजार करते हैं। इस दिन शराब और शबाब पूरे यौवन पर होता है विलासिता का नंगा नाँच होता है, घड़ी की सुइयाँ 12 पर आते ही फोन की घंटियाँ बजनी शुरू हो जाती हैं आतिशबाजी व पटाखे छुडाए जाते हैं लड़के ही नही लड़कियाँ भी जाम को एक नए अंदाज में होठों से लगाने में तनिक भी नही हिचकिचाती और बहुत बड़े हादसो को न्यौता दे बैठती हैं क्या यही हमारी संस्कृति आजादी से पूर्व थी? आज हमारी वेशभूषा, भाषा, खान–पान, आचार– विचार या यूँ कह लो कि भारतीय संस्कृति के नाम पर हमारे देश के नवयुवक–युवतियों को कामुक नाच गानों का मौका देखने के सिवाय कुछ भी शेष नही रहा।

आज हमें स्वाधीन हुए 100 वर्ष भी नही हुए है और अपनी संस्कृति सभ्यता की

शेष पृष्ठ 2 पर

आर्य वीर दल, वीरांगना दल, दयानन्द सेवाश्रम संघ के ग्रीष्मकालीन शिविरों में अपने युवाओं को अवश्य भेजें।

शिविरों की विस्तृत सूचना के लिए लॉगऑन करें www.thearyasamaj.org

ग्रीष्मकालीन अवकाशों में सभी आर्यसमाज बाल निर्माण शिविर का आयोजन करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग बैठक सम्पन्न

सारे भारत में प्रान्तीय स्तर पर युवा कार्यकर्ता संगोष्ठियों का आयोजन होगा

सार्वदेशिक सभा एवं प्रान्तीय सभा अधिकारियों हेतु आध्यात्मिक एवं सांगठनिक चिन्तन शिविर शीघ्र

कार्यकर्ता एवं विद्वत् प्रशिक्षण केन्द्र का प्रस्ताव तैयार करेगी उच्चस्तरीय समिति

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरग बैठक सभा प्रधान आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में सोमवार 25 मार्च , 2013 को सम्पन्न हुई।

बैठक में सर्वश्री आचार्य बलदेव जी (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा), सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी (उप प्रधान), सोमदत्त महाजन (उप प्रधान), डॉ. ब्रह्ममुनि जी (उप प्रधान), प्रकाश आर्य जी (मन्त्री), विनय आार्य जी (उपमन्त्री), वाचोनिधि आर्य (उपमन्त्री), भारत भूषण त्रिपाठी (उपमन्त्री), अमर मुनि जी (उपमन्त्री), राव हरिशचन्द्र आर्य जी (अन्तरंग सदस्य), आचार्य विजयपाल (अन्तरंग सदस्य), देवेन्द्रपाल वर्मा जी (अन्तरंग सदस्य), अरुण प्रकाश वर्मा जी (अन्तरंग सदस्य), डॉ. सरेन्द्र आर्य (अन्तरंग सदस्य), स्वामी सुमेधानन्द जी, (राजस्थान), राकेश चौहान जी, (मन्त्री, जम्मू सभा), आदि आर्यजनों भाग लिया।

इस अवसर पर स्वामी सदाननन्द जी का विशेष आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर विशेष रूप से आचार्य अंशूदेव, श्री दीनानाथ वर्मा, श्री सुधीर गुप्ता, श्री दयाराम बसैये एवं श्री अर्जुन देव चड्ढा जी भी उपस्थित थे।

वेद-स्वाध्याय

बुद्धिपूर्वक बन्धनों से छूटना

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

तनूत्येजेव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिरभ्याधीताम्। इयं ते अग्ने नव्यसी मनीषा युक्ष्वा रथं न शुचयद्भिरङ्गैः।। ऋ0 10/4/6

अर्थ– (वनर्गू) वन में गये हुये (तनूत्यजा) चोरी में ही जीवन लगा देने वाले (तस्कर) दो चोर (रशनाभिः) रस्सियों से (दशभिः) दस अंगुलियों का प्रयोग कर (अभ्यधीताम्) किसी को बांध देते हैं, उसी प्रकार जन्म और मृत्यु से संसार में जीव को दश इन्द्रियों के विषयों से बांध रखा है। (अग्ने) हे प्रकाश स्वरूप परमेश्वर ! (ते) तेरी प्राप्ति के लिये मैं (इयम्) इस (नव्यसी) नूतन (मनीषा) समाधि बुद्धि का सहारा लेता हूँ (न) जैसे (रथम्) रथ में (शुचयद्भिः) अच्छे घोड़े जोते जाते हैं वैसे ही मेरे इन इन्द्रिय घोड़ों को पवित्र कर।

बन्धन किसको अच्छा लगता है? प्रत्येक प्राणी की प्रवृत्ति बन्धन मुक्त रहने की है। किसी पशु को खूंटे से खोल देने पर दौड़ लगाने लगता है। प्रत्येक प्राणी की प्रवृत्ति बन्धन मुक्त रहने की है। किसी पशु – पक्षी को खूंटे से बाहर होते ही उन्मुक्त गगन में उड़ान भरने लगता है। सभी प्राणियों की यह प्रवृत्ति देखे जाने से इतना तो कहा ही जा सकता है कि मुक्त होने की इच्छा किसी न किसी रूप में सर्वत्र देखी जाती है।

अब कल्पना करो उस व्यकित की जो निर्जन वन में अकेला जा रहा हो और उसे मार्ग में **तनू त्यजेव तस्करा वनर्गू** वन में ही अपना डेरा डाल जीवन की परवाह न करते हुये जैसे दो चोर, तस्कर उस यात्री को पकड़कर **रशनाभिर्दशभिरभ्यधीताम्** दोनों हाथों की दशों अंगुलियों अथवा दश रस्सियों से उसके हाथ पैर बांधकर बन्दी बना लें। वह बोल न पाये इसके लिये उसके मुख में कपड़ा ठूंस दें और आँखों पर पट्टी बांध कर किसी अन्धेरी गुफा में बन्धक बना लें। इस दयनीय स्थिति में वह सभी ओर से हताश होकर केवल प्रभु से ही तो प्रार्थना की बात कहने का उसे अवसर ही उपलब्ध नहीं है।

हे भाइयो! उस असहाय की दशा को देख कर सम्भवतः तुम्हारा हृदय द्रवित हो उठे। परन्तु क्या तुम्हें अपनी अवस्था का ज्ञान नहीं है जो चोरों द्वारा निगडित उस पथिक से भी अधिक दयनीय है। तुम कहोगे कि हम तो स्वतंत्र हैं। हमें किसी ने बन्धक नहीं बनाया हुआ। आप हमें व्यर्थ ही भयभीत कर रहे हो। हम आनन्द से खा–पी रहे हैं। हमारे पारिवारिक जन, मित्र, पत्नी पुत्र सभी तो हमारी देखभाल कर रहे हैं। हम जो चाहते हैं वह इच्छा पूरी होती है, फिर आप हमें किस आधार पर बन्दी मान रहे हैं।

यही तो विड़म्बना है कि कारागार में निगडित व्यक्ति उसे ही अपना आश्रय स्थल मान लेता है। स्वतंत्रता के मूल्य से अनजान उसे यदि वहाँ से मुक्त कर भी दिया जाये तो वह फिर वहीं पर आने का प्रयास करता है।

तुम जानना चाहोगे तो सुनो–जन्म और मृत्यु ही वे दो चोर या तस्कर हैं जिन्होंने पाँच ज्ञानेन्द्रियों, पाँच कर्मेन्द्रियों की वासना रूप रस्सी से हमें कस कर बान्धा हुआ है और आशाओं–निराशाओं के भंवर में डूबते–उभरते जिसके आगे अपने बचाने की गुहार लगा सकें। किसी से इस बन्धन से छुटकारा दिलाने की बात भी तो तभी करेगा इस विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता।

ऐसी दयनीय स्थिति में मुक्ति दाता परमेश्वर! सभी ओर से विवश हो जब मैं चेतना में आया और मूर्च्छा टूटी तब तूने मुझे आश्वासन देते हुये कहा हे प्रिय आत्मन्! तुम व्यथित मत हो। **इयं ते अग्ने मनीषा** मैं तुम्हें नूतन बुद्धि देता हूँ जिससे तुम इस बन्धनों से मुक्त हो अपने गन्तव्य तक सकुशल पहुँच जाओगे। मैं तेरे इस आश्वासन को पाकर आनन्द विभोर हो उठा और मुख से अनायास ही निकल पड़ा– **तेरे नाम का सुमरिन करके मेरे मन में सुख भर आया। तेरी कृपा को मैंने पाया तेरी दया को मैंने पाया।। भवसागर की लहरों में भटकी जब मेरी नैया। तट छूना भी मुश्किल था नहीं दीखे कोई खिवैया।। तू लहर बना सागर की मेरी नाव किनारे लाया।।**

हे दयालो। तूने मुझे सदबुद्धि दी और मुझे मुक्ति का मार्ग बताया। अब इतनी कृपादृष्टि और करो। मेरे शरीर रथ में जुते हुये इन **युक्ष्वा रथं न शुचयदिभङ्गैः** इन्द्रिय घोड़ों को पवित्र कीजिये। क्योंकि जिस रथ के घोड़े सधे अधिक सम्भावना यही है कि मार्ग में ही उसकी दुर्गति हो जाये। चंचल और बलवान घोड़े रथ पर सवार होते ही, सारथि कैसा है, यह जान लेते हैं। यदि सारथि सुशिक्षित और शान्तचित्त है तो उसका आदेश मानते हुये ये घोड़े रथ का वहन भली भाँति करते हैं और अनभ्यस्त सारथि के सामने उछल–कुद या दुलत्तियाँ फटकारने लगते हैं।

इन्हें वश में करने के लिये मुझे यमाचार्य का स्मरण हो आया जो नचिकेता (अज्ञानी जीवात्मा) को समझा रहे हैं –

यस्तु विज्ञानवान भवति युक्तेन मनसा सदा। तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः।। *कठो 3.36 //*

जो विज्ञानवान होता है, जिसका मन आत्मा के वश में है, उसकी इन्द्रियाँ वश में रहती हैं, जैसे अच्छे घोड़े सारथि के वश में रहते हैं।

अब मेरी समझ में आ गया। मैं बुद्धि को सारथि मान उसी को शुद्ध,पवित्र बनाने का प्रयास करूँगा। सारथि के हाथ में ही घोड़ों की लगाम रहती है। मन लगाम और उसे नियन्त्रित रखने पर इन्द्रिय रूप घोड़े भी मेरे वश में हो मुझे बन्धन में न डाल मुक्ति तक पहुँचाने में सहायक होंगे। *– क्रमशः*

प्रथम पृष्ठ का शेष

चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा .....

घोर उपेक्षा कर रहे हैं, अभी भी राजनैतिक गुलामी सिर पर सवार है।

प्राच्य संस्कृति के जवाब में विश्व के किसी भी कोने में इतनी आदर्श संस्कृति का उदाहरण मिलना बड़ा मुश्किल है। नया वर्ष इसाईयों के यहाँ जिसे 'न्यू इयर्स डे' कहते हैं, वही 1 जनवरी को होता है। भारत में स्वाधीनता से पूर्व इसका कोई महत्व ही नही था। आज तो इसके पीछे गाँव से लेकर शहर के बच्चे, बड़े, माताओं, बहनों के दिमागों में पागलपन सवार है पश्चिमी सभ्यता की धूल हमारे ऊपर छाई हुई है। विशेष बात यह है कि ये धूल ऐसे ही नही छाई इसके पीछे भारतीय संस्कृति व सभ्यता का सत्यानाश करने के लिए पंडित जवाहर लाल नेहरु ने अंग्रेजियत को बरकरार रखने की शर्त को सत्ता हस्तांतरण में स्वीकार किया था जिसका दुष्परिणाम आज तक भोग रहे हैं।

यह 2 1 वीं शताब्दी जो है वह ईस्वी संवत् के अनुसार होती है यदि सृष्टि संवत् की दृष्टि से देखेंगे तो सृष्टि को बने हुए 1 अरब 96 करोड़ 08 लाख 53 हजार 113 वर्ष हो चुके हैं और 114वां वर्ष प्रारम्भ हो गया है। इससे यह सिद्ध हुआ कि करोड़ों शताब्दियाँ हमने बिताई और लाखों शताब्दी आने वाली हैं। इतने लम्बे इतिहास को झुठलाकर संसार को केवल मात्र 20 गिनी चुनी शताब्दी पुराना कहना अपने आप में बड़ी भारी भूल है और ईश्वर की व्यवस्थाओं को नकारने का प्रयास है। सृष्टि के रचयिता परमपिता परमात्मा ने वनस्पति एवं सम्पूर्ण जीव–जगत की रचना करने के उपरान्त यहाँ तक कि छहों ऋतुओं को उत्पन्न कर पृथ्वी माता को दुल्हन की तरह सजाकर तत्पश्चात् मनुष्य को उत्पन्न किया, क्योंकि ईश्वर की सारी ही कृतियों में मानव सर्वश्रेष्ठ कृति है, पृथ्वी माता के आँचल में मनुष्य ने सर्वप्रथम अपने लोचन खोले, उस समय दिसम्बर की कड़कती ठण्ड नही बल्कि बसन्त ऋतु अपनी सुन्दरतम् आभा बिखेर रही थी। समझने की बात यह है कि कोई भी इंजीनियर जब इंजन या किसी मशीन का निर्माण करता है तो साथ में जानकारी के लिए एक परिचय–पुस्तिका भी देता है, जिसमें उसकी सम्पूर्ण जानकारी होती है। इसी प्रकार उस सर्वशक्तिमान महा इंजीनियर ने सृष्टि रूपी मशीन का निर्माण किया, तब 'वेद' रूपी ज्ञान उन प्रथम महामानवों (अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा) के अन्तःकरण में दिया। वेद सम्पूर्ण ज्ञान–विज्ञान के भण्डार हैं। वेद ज्ञान के आधार पर हमारे प्राचीन महा–मनीषियों, ऋषि–मुनियों ने आदि सृष्टि से लेकर आज तक हर पदार्थ का विवरण रखा है। आदि सृष्टि से ही आर्यो में चैत्र मास शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को ही नव वर्ष दिवस के रूप में मनाने की प्रथा प्रचलित है, मुस्लिम राज्य में आर्यो की संस्थाएं अस्त–व्यस्त होने पर भी यह परम्परा बनी हुई थी। वस्तुतः यही भारत वर्ष का नवसंवत्सर आरम्भ दिवस है।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

आर्य विद्या परिषद दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन विभाग
शिष्टाचार एवं नैतिक शिक्षा

कक्षा - 1 से 4 तक : 25/- रुपये मात्र
कक्षा - 4 से 8 तक : 30/- रुपये मात्र
कक्षा - 9 से 12 तक : 35/- रुपये मात्र

विद्यालयों के लिए 25 प्रतिशत विशेष छूट

प्राप्ति स्थान : आर्य विद्या परिषद दिल्ली,
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
सम्पर्क चलभाष : विजय आर्य (9540040339)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
पांचवा आर्य परिवार विवाह योग्य युवक–युवतियों का परिचय सम्मेलन का पंजीकरण यथाशीघ्र कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) द्वारा आरम्भ किए गए आर्य परिवार विवाह संयोग सेवा के पांचवें परिचय सम्मेलन के लिए पंजीकरण आरम्भ हो गए हैं। यह सम्मेलन **रविवार,14 जुलाई 2013** को प्रातः 10 बजे **आर्य समाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट –2 नई दिल्ली** में आयोजित किया जाएगा। अतः जो आर्य महानुभाव विवाह योग्य अपने पुत्र/ पुत्रियों का पंजीकरण कराना चाहते हैं, वे पंजीकरण फार्म सभा कार्यालय से मंगा सकते हैं अथवा सभा की वैबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर सकते हैं। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **200 रुपये (दो सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट** संलग्न कर **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0) 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–1'** के पते पर भेज दें और जिन आर्य बन्धुओं के **आवेदन पत्र 30 जून, 2013 तक** हमारे कार्यालय में प्राप्त हो जाएंगे उनके ही परिचय आर्य युवक–युवती परिचय निर्देशिका में प्रकाशित हो सकेंगे। इस वर्ष इसे और व्यापक रूप देते हुए इसमें अनेक आर्यजनों ने अपना सहयोग निम्न रूप से प्रदान किया है। इन सभी महानुभावों से क्षेत्रीय स्तर पर भी सम्पर्क किया जा सकता है।

संयोजक	कार्ययोजना संयोजक	संयोजक आयोजन	राष्ट्रीय संयोजक
कंवरभान खेत्रपाल (0990083831)	गोविन्दलाल नागपाल (09811623552)	प्रियव्रत आर्य, प्रधान आर्यसमाज जी.के.–2	अर्जुनदेव चड्ढा (09414187428)

विभिन्न क्षेत्र के संयोजक

आन्ध्र प्रदेश
श्री धर्मतेजा जी
(हैदराबाद)
(09848822381)

मध्यप्रदेश
श्री भगवानदास अग्रवाल
रतलाम
(08989467396)

हिमाचल प्रदेश
श्री रामफल आर्य,
सुन्दर नगर
(09418277714)

पूर्वी उत्तर प्रदेश
श्री प्रमोद आर्य
वाराणसी
(09389252751)

पश्चिमी उत्तर प्रदेश
श्री अशोक आर्य,
अमरोहा
(09412139333)

गुजरात
श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल,
अहमदाबाद
(09824072509)

उत्तराखण्ड
डॉ.विनय वेदालंकार,
(काशीपुर)
(09412042430)

राजस्थान
श्री अशोक आर्य
उदयपुर
(09001339836)

हरियाणा
श्री कन्हैयालाल आर्य
(गुड़गाँव)
(09911179073)

पंजाब
श्री दिनेश आर्य
अमृतसर
(01832333899)

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म् ।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.)

15–हनुमान रोड, नई दिल्ली –110001 दूरभाष :– 011–23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com web : www.thearyasamaj.org; IVR 011-23488888 द्वारा

आर्य परिवार युवक–युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें – *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

फोटो युवक–युवती

1. युवक/युवती का नाम :.....गौत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई.....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
.....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता .....
..... मासिक आय .....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/सरंक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता: .....
.....
दूरभाष :..... मोबा :..... ईमेल: .....
8. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
9. भाई: ..... विवाहित ..... अविवाहित: .....
10. बहन : ..... विवाहित ..... अविवाहित :.....
11. मकान निजी/किराये का है.....
12. किस आर्यसमाज से सम्बन्धित हैं? .....
13. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
14. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) चिन्ह लगाएं : विधुर : ( ) विधवा: ( ) तलाक : ( ) विक्लांग: ( )
15. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में दें :.....
.....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट: 1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 200/– का ड्राफ्ट/मनीआर्डर भेजने का कष्ट करें।
2. विक्लांग युवक–युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क रु.100 /– रखा गया है।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को **www.thearyasamaj.org** से डाउनलोड कर सकते हैं। 5. इस फार्म की फोटो कॉपी भी मान्य होगी। 6. विशेष आग्रह : अपने रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में आवश्य साथ लावें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

8 अप्रैल, 2013 से 14 अप्रैल, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-11001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 11 / 12 अप्रैल, 2013

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 10 अप्रैल, 2013

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,

15 - हनुमान रोड नई दिल्ली-1

दूरभाष : 23360150, 23365959

Email : aryasabha@yahoo.com

– : प्राप्ति स्थान : –

विशेष सूचना

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार वाहन, वैदिक प्रकाशन विभाग एवं आर्य सन्देश से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की जानकारी/समस्या/समाधान के लिए श्री विजय आर्य (9540040339) से दोपहर 12 से रात्रि 7.30 बजे के मध्य सम्पर्क करें। - महामन्त्री

नेमस्लिप्स

विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों को महर्षि दयानन्द जी के बारे में जानकारी देने तथा उन्हें आर्यसमाज की ओर आकर्षित करने की छोटी सी शुरुआत : कापी–किताबों पर चिपकाने के लिए नेमस्लिप्स। 21 स्लिप्स का एक सैट मात्र 10/– रुपये प्रति शीट।

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 400/-रु. सैकड़ा	मात्र 300/-रु. सैकड़ा

ब्रेल लिपि में महर्षि दयानन्द जीवनी

मात्र 1000/-रु.

आर्यजन अपनी आर्य समाज की ओर से अंध विद्यालयों को भेंट दें।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें।

–: प्राप्त स्थान : –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड,नई दिल्ली

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : सुशील महाजन सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर